

डॉ. डेविड टर्नर, गॉस्पेल ऑफ जॉन, सत्र 22, द फ्यूचर इन जॉन

© 2024 डेविड टर्नर और टेड हिल्डेब्रांट

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 22 है, लाइफ एस्चैटोलॉजिकलाइज़्ड, जॉन में भविष्य।

जॉन के सुसमाचार में हमारे अध्ययन में, हमने जॉन के अध्याय-दर-अध्याय का अध्ययन करते हुए 20 वीडियो प्रस्तुत किए हैं, जो पाठ के प्रवाह का अनुसरण करने और ऐसा करने पर सामने आने वाले विभिन्न महत्वपूर्ण विषयों पर चर्चा करने का प्रयास करते हैं।

हम जॉन 1 और उत्पत्ति 1 पर एक व्याख्यान भी प्रस्तुत कर रहे हैं, यह जानने की कोशिश कर रहे हैं कि किस तरह से प्रोटोलॉजी, पहली चीजों का सिद्धांत, दो पुस्तकों को एक साथ जोड़ता है, और तर्क दे रहा है कि जॉन में यह क्रम में उत्पत्ति की ओर इतना संकेत नहीं करता है यह पुष्टि करने के लिए कि यीशु मूल निर्माता हैं, बल्कि इस तथ्य के आधार पर पुष्टि करने के लिए कि यीशु मूल निर्माता हैं, इसके अलावा यह पुष्टि करने के लिए कि वह सृष्टि का नवीनीकरणकर्ता हैं। इसलिए, हम जॉन 1 और उत्पत्ति 1 के प्रकाश में उत्पत्ति के मुद्दे पर बात कर रहे हैं। इसलिए जॉन पर हमारे अंतिम व्याख्यान में, हम एक अध्ययन प्रस्तुत करने जा रहे हैं कि जॉन भविष्य को कैसे प्रस्तुत करता है। हम इसे लाइफ एस्चाटोलोगाइज़्ड कह रहे हैं, और हमारी कवर स्लाइड पर आपने देखा होगा कि हमारे पास एक बहुत ही मजबूत सर्वनाशी छवि की तस्वीर है, अल्ब्रेक्ट ड्यूरर की, जो लगभग 500 साल पहले बनाई गई थी, निश्चित रूप से एक लोकप्रिय छवि, प्रकाशितवाक्य अध्याय 6 से सर्वनाश के चार घुड़सवार। इस संबंध में, जब हम युगांतशास्त्र के बारे में सोचते हैं, भविष्य में होने वाली चीजों के बारे में सोचते हैं तो हम अक्सर यही सोचते हैं।

हालाँकि, इस अध्ययन में हम जॉन के युगांत विज्ञान के विशिष्ट नोट को समझने की कोशिश करने जा रहे हैं, जो मेरे विचार से भविष्य को वर्तमान से गुणात्मक रूप से अलग कुछ के रूप में पेश करने के बजाय वर्तमान का युगांत विज्ञान है। तो परिचय के संक्षेप में, इस अध्ययन में हम यीशु के अनुयायियों के जीवन के विशेष संदर्भ में जॉन के युगांतशास्त्र का सारांश प्रस्तुत करने जा रहे हैं। भविष्य के बारे में जॉन की शिक्षा वर्तमान के बारे में उनकी शिक्षा से कम प्रमुख और प्रासंगिक है।

जॉन की दिलचस्पी यह बताने में नहीं है कि क्या होगा, बल्कि यह वर्णन करने में है कि क्या होगा। जो अनुमान लगाता है कि क्या होगा, और जो होगा वह पहले ही शुरू हो चुका है। यीशु के अनुयायी पहले ही उसके वचन के द्वारा अनन्त जीवन के लिए पुनर्जीवित हो चुके हैं।

उनका पुनरुत्थान अंतिम दिन मानव जाति के पुनरुत्थान का प्रतीक है। समय आ रहा है और अब आ रहा है, जैसा कि यूहन्ना अध्याय 5 श्लोक 24 से 29 में स्पष्ट करता है।

इस जानकारी को देखते समय सबसे पहली चीज़ जो हम करना चाहते हैं वह है कुछ ऐतिहासिक मान्यताओं पर चर्चा करना।

इस अध्ययन की कार्यशील धारणा की पहचान की जानी चाहिए। न तो सुसमाचार, न ही पत्र और न ही जॉन का सर्वनाश यह निर्दिष्ट करता है कि जॉन द एपोस्टल, प्रिय शिष्य, उनका लेखक है। फिर भी, इस दृष्टिकोण के लिए एक मजबूत मामला बनाया जा सकता है कि प्रेरित जॉन ने इन सभी पांच कार्यों को लिखा था, या कम से कम उनके तत्काल अनुयायियों द्वारा प्रसारित परंपराओं का स्रोत था।

रूढ़िवादी विद्वानों के बीच इस प्रकार के विचार आम हैं। जैसा भी हो, इस कोष की धार्मिक निरंतरता इसके लेखकत्व की तुलना में वर्तमान अध्ययन के लिए अधिक प्रासंगिक है। जॉन का सुसमाचार, पत्र और सर्वनाश कैसे हुआ यह बिल्कुल स्पष्ट नहीं है।

कोई जॉन के सुसमाचार की रचना, प्रसार और स्वागत को पत्रों और अंततः सर्वनाश की सेटिंग के रूप में मान सकता है। एक विपरीत परिदृश्य भी प्रशंसनीय है, जिसमें पत्र विकासशील जोहानाइन शिक्षण को प्रतिबिंबित करते हैं, जो बाद में कथा और सर्वनाश खंडन में अपनी पूर्ण अभिव्यक्ति के लिए आता है। सुसमाचार और पत्रों के बीच जो भी ऐतिहासिक संबंध हो, सर्वनाश को संभवतः जोहानिन शिक्षण के बाद के चरण का प्रतिनिधित्व करने के लिए लिया जा सकता है, जो कि यीशु की जीत की कल्पना करता है जो पहले से ही सुसमाचार में वर्णित है और जो इसे प्रस्तुत विशिष्ट स्थितियों पर लागू करता है पत्र।

इस पर एक दिलचस्प दृष्टिकोण ल्यूक टिमोथी जॉनसन की पुस्तक, द राइटिंग्स ऑफ द न्यू टेस्टामेंट में है। जॉनसन का सुझाव है कि जॉन के सुसमाचार के प्रति अलग-अलग स्वागत के कारण डेमेट्रियस द्वारा ले जाए गए तीन पत्रों को एक पैकेट के रूप में एक ही समुदाय में भेजा गया। तीसरा जॉन गयुस की निष्ठा की सिफारिश करता है, डायोक्लेटियन के विरोध को उजागर करता है, और डेमेट्रियस का समर्थन करता है।

द्वितीय जॉन को चर्च में कवर लेटर या प्रथम जॉन के परिचय के रूप में पढ़ा जाना चाहिए। फर्स्ट जॉन बुजुर्गों की परंपरा के प्रति निष्ठा का उपदेश देने वाला एक उपदेश है, जैसा कि जॉन के सुसमाचार में व्यक्त किया गया है। इसके अलावा, जैसा भी हो, इन पुस्तकों की ऐतिहासिक उत्पत्ति के बारे में सोचना दिलचस्प है, लेकिन आज हम जो करने का प्रयास कर रहे हैं वह उनके विषयगत सहसंबंधों और निरंतरता को समझना है।

इसलिए, जोहानीन युगांतशास्त्र के संदर्भ में पहली बात जो हम सोचना चाहते हैं वह यह है कि हमें इसे साकार भविष्य या आरंभिक युगांतशास्त्र के रूप में कैसे शैलीबद्ध करना चाहिए। जोहानाइन लेखन में भविष्य के अध्ययन के सामने सबसे बुनियादी प्रश्न यह है कि क्या भविष्य को बिल्कुल भी संबोधित किया गया है। लैड ने अपने न्यू टेस्टामेंट धर्मशास्त्र में स्पष्ट रूप से कहा है कि, उद्धरण, सिनोप्टिक्स की सबसे सतही तुलना और जॉन इस धारणा के साथ आगे बढ़ते हैं कि जोहानिन जीसस युगांतशास्त्र में बहुत कम रुचि रखते हैं।

स्टीफन स्माले की टिप्पणी अधिक सूक्ष्म है। चौथे प्रचारक के पास अंतिम चीजों के बारे में कहने के लिए बहुत कम है और वह कम से कम, समय और अनंत काल के बीच महत्वपूर्ण अंतर्संबंध के बारे में अधिक चिंतित है। जोहानिन की कुछ शिक्षाएँ आम तौर पर अभी तक समझी जाने वाली चीजों की वर्तमान प्राप्ति पर जोर देती हैं।

उदाहरण के लिए, यीशु मसीहा पहले ही परमेश्वर को प्रकट करने और प्रामाणिक पूजा स्थापित करने के लिए आ चुके हैं। यूहन्ना अध्याय 1 श्लोक 14 से 18, यूहन्ना अध्याय 4 श्लोक 21 से 26, 1 यूहन्ना अध्याय 4 पद 2 और अध्याय 5 पद 6 को एक साथ लाएँ। एक और प्रस्ताव जैसे कि यीशु पहले ही दुनिया पर विजय प्राप्त कर चुका है, उसकी मुक्ति का कार्य समाप्त हो गया है। यूहन्ना 16:23, 17:4, 19, 30 जैसे पाठ, साथ ही 1 यूहन्ना अध्याय 2 पद 8, अध्याय 3 पद 5, और यहां तक कि प्रकाशितवाक्य 1, 5, 3, 21 और 5, 5 की पुस्तक भी। एक और जोहानिन युगांतशास्त्रीय शिक्षा यह है कि यीशु में विश्वास करने वालों ने पहले ही बुराई पर विजय पा ली है।

1 यूहन्ना अध्याय 2 श्लोक 13 और 14, 1 यूहन्ना 4:4, 1 यूहन्ना 5:4 और 5, प्रकाशितवाक्य अध्याय 12 श्लोक 10 और 11, मुझे लगता है कि ये सभी पाठ 16 में यीशु के मौलिक शब्दों का संदर्भ दे रहे हैं और उन पर काम कर रहे हैं: 33, मैंने संसार पर विजय प्राप्त कर ली है। जॉन के अनुसार पुनरुत्थान का समय पहले से ही यहाँ है। यूहन्ना 5 श्लोक 25 से 29 के अनुसार मृत लोग परमेश्वर के पुत्र की आवाज सुन रहे हैं और वे जीवित हो रहे हैं।

युगांत संबंधी तथ्यों की वर्तमान प्राप्ति के बारे में एक और दिलचस्प कथन यह है कि इस दुनिया के राजकुमार शैतान का पहले ही न्याय किया जा चुका है। यूहन्ना अध्याय 12 श्लोक 31, 16:11, 1 यूहन्ना 3:8, प्रकाशितवाक्य 12 श्लोक 7 से 10 की तुलना करें। यीशु में विश्वासियों के पास पहले से ही अनन्त जीवन है।

अविश्वासियों को पहले से ही यूहन्ना 3, 18, यूहन्ना 3, 36, 1 यूहन्ना 5, 12, और 13 जैसे ग्रंथों और उस अध्याय में श्लोक 19 के अनुसार न्याय के अधीन किया जा चुका है। अंततः, 1 जॉन के अनुसार मसीह-विरोधी पहले से ही दुनिया में मौजूद हैं। 1 यूहन्ना 2:18, 22, 1 यूहन्ना 4:3, और 2 यूहन्ना पद 7। इसलिए, यूहन्ना उन चीजों के बारे में बहुत नाटकीय ढंग से बोलता है जिन्हें हम आम तौर पर भविष्य मानते हैं जो पहले ही शुरू हो चुकी हैं।

दूसरी ओर, जॉन भविष्य के बारे में स्पष्ट रूप से बोलते हैं। यूहन्ना 14 के अनुसार यीशु अपने शिष्यों के लिए जगह तैयार करने जाएंगे और फिर उनके पास से आएंगे। हालांकि इस पाठ पर बहुत बहस हुई है, ऐसा लगता है कि भविष्य में होने वाली युगांत विद्या कम से कम इस मार्ग का एक निहितार्थ है।

जॉन के सुसमाचार में अतिरिक्त भविष्य युगांतशास्त्र पाठ अध्याय 21 श्लोक 22 और 23 होगा। हम इसकी तुलना 1 जॉन 2 श्लोक 28, अध्याय 3 श्लोक 2 और 3, साथ ही प्रकाशितवाक्य 1 में मसीह के भविष्य में आने के संदर्भ से कर सकते हैं: 7, 2:5, अध्याय 2 और 3 में कई और पाठ, साथ ही निश्चित रूप से अध्याय 19 और अध्याय 22 में पुस्तक का निष्कर्ष। जॉन में भविष्य के युगांतशास्त्र का एक और पहलू यह होगा कि यीशु के दुश्मनों को अनुमति दी जा सकती है

प्रकाशितवाक्य 6:2 और सर्वनाश के अन्य ग्रंथों के अनुसार कुछ समय के लिए अपने लोगों पर विजय प्राप्त करेगा, लेकिन अंततः यीशु अपने सभी शत्रुओं पर विजय प्राप्त करेगा, प्रकाशितवाक्य 17 श्लोक 14।

जॉन की शिक्षा का भविष्य का युगांतशास्त्र का एक और पहलू यह है कि पुनरुत्थान का समय आ रहा है। यद्यपि जॉन 5 के अनुसार एक अर्थ में पुनरुत्थान का समय पहले से ही आ चुका है, जॉन 5 यह कहता है कि दूसरी बार अभिव्यक्ति होती है कि पुनरुत्थान का समय आ रहा है जब सभी लोगों को या तो जीवन के लिए या न्याय के लिए उठाया जाएगा। 1 यूहन्ना 2 पद 18 के अनुसार, वास्तव में वर्तमान मसीह-विरोधी हैं, लेकिन ये मसीह-विरोधी भविष्य के मसीह-विरोधी की वास्तविकता को प्रदर्शित करते हैं।

जॉन 1 यूहन्ना अध्याय 2, 18 में यह भी कहता है कि यह अंतिम समय है और यीशु में विश्वास करने वाले विश्वास के साथ फैसले के दिन की आशा कर सकते हैं, 1 यूहन्ना अध्याय 4, पद 17। इस क्षेत्र में जॉन की शिक्षा की जटिलता ने सीएच जैसे विद्वानों को प्रेरित किया है डोड और रुडोल्फ बुल्टमैन का तर्क है कि जॉन के भविष्य को वर्तमान में पहले से ही पूरी तरह से महसूस किया जाना चाहिए। डोड ने तर्क दिया कि ईसा मसीह के आगमन में देरी ने शुरुआती ईसाइयों को एक आदिम भविष्यवादी सर्वनाशी युगांतशास्त्र को आत्मा के माध्यम से ईसा मसीह के निवास के अधिक सूक्ष्म रहस्यमय अर्थ में प्रस्तुत करने के लिए प्रेरित किया।

बुल्टमैन के मिथकीकरण के अस्तित्ववादी एजेंडे के परिणामस्वरूप दुनिया के सर्वनाशकारी अंत सहित सभी चमत्कारी चीजों को नकार दिया गया। उन्होंने युगांतशास्त्र को प्रामाणिक व्यक्तिगत अस्तित्व के रूप में समझा और जॉन में भविष्यवादी पाठ को बाद के प्रक्षेप के लिए जिम्मेदार ठहराया। वॉन वाल्डे का हालिया काम इसी तरह चीजों को संभालता है।

वे चौथे सुसमाचार में तीन अतिरिक्त जोड़ने के लिए बहस कर रहे हैं। ये परिवर्धन पहले चरण से उत्तरोत्तर युगांत विज्ञान को विकसित करते हैं, जहां विश्वास करने वाले समुदाय द्वारा शाश्वत जीवन का कब्जा दूसरे चरण की ओर ले जाता है, मृत्यु से परे विश्वासियों का आध्यात्मिक अस्तित्व, जो तीसरे चरण की ओर ले जाता है, एक समय में विश्वासियों का भविष्य का शारीरिक पुनरुत्थान। गणना निर्धारित की जानी है। एक विपरीत दृष्टिकोण आम तौर पर पारंपरिक व्यवस्थावादियों द्वारा व्यक्त किया जाता है, जिनके लिए भगवान का शासन पूरी तरह से भविष्य है।

चार्ल्स राइरी ने जोहानाइन युगांतशास्त्र के अध्ययन में सुसमाचार और पत्रों की भूमिका को कमतर आंकते हुए कहा कि जोहानाइन युगांतशास्त्र मुख्य रूप से सर्वनाश में पाया जाता है। यह कथन कड़ाई से भविष्यवादी दृष्टिकोण अपनाता है। जॉन वालवूड ने स्वीकार किया कि यीशु के पहले आगमन के दौरान ईश्वर का राज्य कुछ अर्थों में मौजूद था, लेकिन यह भी कहा कि, उनके आगमन से जुड़ी आशाएं और वादे और उम्मीदें पूरी नहीं हुईं।

युगांतशास्त्र जिसमें उन्हें शामिल किया गया था, उसका एहसास नहीं हुआ। वादा किए गए युगांत संबंधी आशीर्वाद की थोड़ी सी भी प्राप्ति के बिना वादा किए गए आगमन के बारे में वॉल्वोर्ड का

दृष्टिकोण बिल्कुल भविष्यवादी है। इसी तरह, जॉन 5, 25 से 29 के बारे में अल्वा जे. मैकलीन का उपचार आध्यात्मिक उत्थान के वर्तमान घंटे को भौतिक पुनरुत्थान के युगांतिक घंटे से इतनी सख्ती से अलग करता है कि किसी को आश्चर्य होता है कि यीशु ने पूर्व का वर्णन बाद के संदर्भ में क्यों किया।

न्यू टेस्टामेंट धर्मशास्त्र के बड़े संदर्भ में, इस प्रकार के भविष्यवाद का जोहान्स वीस के सुसंगत युगांतशास्त्र या परिणामी युगांतशास्त्र के साथ संबंध है। न्यू टेस्टामेंट विद्वता ने कुल मिलाकर, पूरे धर्मशास्त्रीय स्पेक्ट्रम में, इन सभी-या-कुछ भी नहीं दोनों दृष्टिकोणों का विरोध किया है। नए नियम के युगांतशास्त्र के वास्तविक और भविष्यवादी पहलुओं को पूरक और सहसंबद्ध के रूप में देखना, न कि विरोधाभासी और सुधारात्मक।

अनन्त जीवन पर जॉन के फोकस और ईश्वर के राज्य पर सिनोप्टिक्स के बीच के अंतर को आमतौर पर अलग-अलग शिक्षाओं के रूप में नहीं बल्कि अलग-अलग जोर के रूप में समझा जाता है। डब्ल्यूएफ हॉवर्ड ने तर्क दिया कि 1:14 से 18 में भगवान की महिमा की व्याख्या के रूप में यीशु की जोहानिन शिक्षा को उस महिमा की अंतिम पूर्ण अभिव्यक्ति की आवश्यकता है। सीएफडी मौल का मानना था कि व्यक्तिगत व्यक्तिगत युगांतशास्त्र पर जॉन के जोर ने उन्हें एक वास्तविक जोर दिया।

जॉन 3:17 और उसके बाद के बारे में बोलते हुए, रुडोल्फ श्राकनबर्ग ने कहा कि जॉन के गूढ़ रहस्योद्घाटन के महत्व को जॉन से बेहतर किसी ने नहीं समझा और वर्तमान निर्णय पर जॉन का जोर भविष्य के फैसले में देरी नहीं करता है, क्षमा करें, भविष्य के फैसले से इनकार नहीं करता है, जो वर्तमान में ईश्वर के बचाने के कार्य को पूर्ण बनाता है। डेविड औन ने जोहानाइन युगांतशास्त्र के साकार या रहस्यमय पहलुओं को एक सांस्कृतिक सेटिंग में खोजा। डब्लूजी कुमेल ने दैवीय बचत अधिनियम के हिस्से के रूप में वादा किए गए भविष्य की पूर्णता में आशा की वास्तविक आवश्यकता की बात की, जिसके कारण जॉन में मुक्ति की वर्तमान वास्तविकता सामने आई।

सीके बैरेट ने वर्तमान पर जोहानीन के जोर को स्वीकार किया, लेकिन जोर देकर कहा कि जॉन जीवन प्रवचन की तथाकथित रोटी में जॉन 6:39, 40, 44, और 53 जैसे ग्रंथों में अंतिम दिन के सर्वनाश का एक उपाय बरकरार रखता है। लिओनहार्ड गोप्पेल्ट ने चौथे सुसमाचार में वर्तमान और भविष्य को पूर्व को परम ठोस और दृश्यमान के रूप में देखकर, बाद वाले को पूर्व की अंतिम ठोस और दृश्यमान अभिव्यक्ति के रूप में जोड़कर जोड़ा। मूडी स्मिथ की टिप्पणी है कि जॉन में, मुक्ति न केवल एक वर्तमान वास्तविकता है बल्कि इसकी उपस्थिति के आधार पर, भविष्य पहले से ही आशा के बजाय आश्वासन का विषय है।

फ्रैंक थिएलमैन ने न्यू टेस्टामेंट में वर्तमान पर जॉन के जोर को असामान्य बताया है, फिर भी वह उत्पीड़न के दौरान दृढ़ता की आवश्यकता पर जॉन के इसी जोर को सबूत के रूप में लेते हैं कि भविष्य की गूढ़ विद्या जॉन के लिए एक धार्मिक आवश्यकता है। थॉमस श्राइनर ने नए नियम के धर्मशास्त्र का उपचार ईश्वर के राज्य की मूलभूत विशेषता के रूप में पहले से ही अभी तक नहीं बोली गई भाषा का उपयोग करके शुरू किया है। क्रेग केस्टर ने यीशु के आगमन को समय में

एक दरार के रूप में वर्णित किया है जो अंततः और निर्णायक रूप से भविष्य की आशाओं और वर्तमान वास्तविकताओं के संबंधों को बदलकर दुनिया को बदल देता है।

नए नियम के बाइबिल धर्मशास्त्र के प्रति जीके बीले का व्यापक दृष्टिकोण ईसा मसीह में ईश्वर की क्रिया पर आधारित है, जो समग्र रूप से सृष्टि के नवीनीकरण का उद्घाटन करता है और अंत में उद्घाटन और पूर्ण युगांतशास्त्रीय वास्तविकताओं के बीच संबंधों की चर्चा के साथ समाप्त होता है। प्रमुख बाइबिल धर्मशास्त्र के लोगों के इस सर्वेक्षण के प्रकाश में, यह स्पष्ट प्रतीत होता है कि जॉन भगवान के गौरवशाली शासन को न तो पूरी तरह से साकार और न ही पूरी तरह से भविष्य के रूप में चित्रित करता है, बल्कि दोनों को वर्तमान में आंशिक रूप से साकार किया गया है और अभी भी भविष्य में पूरी तरह से महसूस किया जाना बाकी है। नए नियम के धर्मशास्त्री आम तौर पर भविष्य की वास्तविकताओं की नैतिक ऊर्ध्वाधर वर्तमान पूर्ति और उन्हीं वास्तविकताओं की युगान्तकारी क्षैतिज भविष्य की पूर्ति दोनों के बारे में बात करते हैं।

जोहानिन शिक्षण का वर्णन करने में उद्घाटन शब्द अधिक महत्वपूर्ण है, मुझे कहना चाहिए, एहसास शब्द की तुलना में अधिक उपयुक्त है। उद्घाटन किया गया यह शब्द संभवतः जर्मन में जोआचिम जेरेमियास की शब्दावली से संबंधित है, जिन्होंने ज़िक की बात की थी एहसास एस्केटोलोजी जो मुझे लगता है कि बोध की प्रक्रिया में मोटे तौर पर एस्केटोलॉजी जैसी किसी चीज़ में तब्दील हो जाएगी। सख्ती से भविष्यवादी युगांतशास्त्र मसीह की मृत्यु, जीवन, मृत्यु, पुनरुत्थान और अपने लोगों को अपना काम करने के लिए सशक्त बनाने के लिए आत्मा के अवतरण के शक्तिशाली प्रभाव पर जोहानिन के तनाव को कम करता है।

यूहन्ना 20 श्लोक 21 और 22, प्रथम यूहन्ना अध्याय 2 श्लोक 8, 21:4, 20:27 जैसे पाठ। सख्ती से महसूस किया गया युगांतशास्त्र बाइबिल की शिक्षा को छोटा कर देता है कि जो कुछ मसीह में पहले ही शुरू हो चुका है उसे खत्म करने के लिए भगवान क्या करेगा। जोहानिन युगांतशास्त्र पहले से ही को अभी तक नहीं से जोड़ता है और यीशु के अनुयायियों द्वारा पहले से ही अनुभव किया गया युगांतिक जीवन आत्मा द्वारा उनमें निवास करता है और उन्हें आने वाली परेशानियों के लिए सशक्त बनाता है।

यूहन्ना 15 पद 18 से 16:11, यूहन्ना 16:20 से 22 जैसे पाठ, और यीशु की प्रार्थना में संकेत, यूहन्ना 17:14, और अध्याय 21 पद 18 में पतरस के शब्दों में। आगे जॉन में, के बारे में शिक्षण वर्तमान वास्तविकता के रूप में शाश्वत जीवन भविष्य की परिणति को मानता है जो इस पर आधारित है। जब कोई इस दृष्टिकोण को ऊपर बताए गए पहले से ही अभी तक नहीं बताए गए बिंदुओं पर लागू करता है, तो एक विश्वसनीय, उल्लेखनीय धार्मिक परिप्रेक्ष्य उभर कर आता है।

सबसे पहले, यीशु परमेश्वर को प्रकट करने और प्रामाणिक पूजा स्थापित करने के लिए पिता से आए हैं। वह अपने अनुयायियों के लिए जगह तैयार करने के लिए पिता के पास जाएगा और फिर उनके साथ अपने रिश्ते को पूरा करने के लिए पृथ्वी पर लौट आएगा। दूसरा, यीशु ने पिता का कार्य पूरा कर लिया है और संसार और उसके राजकुमार पर विजय प्राप्त कर ली है।

उनके अनुयायी विश्वास के माध्यम से इस जीत में भाग लेते हैं, फिर भी उन्हें परेशानियों का अनुभव होगा और यहां तक कि उनके अंतिम समर्थन और जीत में भाग लेने से पहले वे यीशु के

दुश्मनों द्वारा अस्थायी रूप से पराजित हो जाएंगे। तीसरा, यीशु का संदेश पहले से ही लोगों को ईश्वर से अलगाव की मृत्यु से उठाकर उसके साथ संगति के जीवन की ओर ले जा रहा है। इस जीवन का वर्तमान कब्ज़ा विश्वासियों को भविष्य में इसके स्थायित्व का आश्वासन देता है।

एक दिन, यीशु पूरी तरह से, इनाम या सज़ा के लिए सभी मनुष्यों को पुनर्जीवित करेगा। इस सामान्य परिप्रेक्ष्य से, कोई भी भविष्य को चित्रित करने वाले जोहानाइन विषयों की लाभप्रद रूप से जांच कर सकता है। लघु अध्ययन के लिए ऐसे विषयों का चयन करना कठिन पद्धतिगत विकल्पों की आवश्यकता है।

कोई भी जॉन की शिक्षाओं का विषयगत रूप से लाभकारी रूप से सर्वेक्षण कर सकता है, जैसा कि डब्ल्यूआर कुक करते हैं, जो मृत्यु, शाश्वत जीवन, पुनरुत्थान, स्वर्ग, न्याय और मसीह की वापसी का इलाज करते हैं। हालाँकि, स्थान की सीमाओं के कारण, इस अध्ययन के शेष भाग में केवल कुछ अत्यधिक प्रासंगिक जोहानाइन विषय शामिल होंगे। सबसे पहले, अभी भी यहाँ घंटा आ रहा है।

दूसरा, परमेश्वर का राज्य। तीसरा, यीशु का आगमन। और चौथा, सृष्टि का नवीनीकरण।

तो, अब हम जॉन के सुसमाचार में कुछ चयनित युगांतशास्त्रीय विषयों की ओर मुड़ते हैं। सबसे पहले हम उस घंटे को देखते हैं जो पहले ही आ चुका है, जो आने वाला है और पहले से ही यहाँ है। हालाँकि चौथे सुसमाचार में घंटा शब्द लगभग 25 बार आता है, जॉन 4.23 और 5.25 में कहावत, घंटा आ रहा है और अब है, पर विशेष ध्यान देने की आवश्यकता है।

अपनी दो घटनाओं में, यह आकर्षक अभिव्यक्ति भविष्य की उपस्थिति का प्रतीक है, एक शब्द का उपयोग करने के लिए, जॉर्ज लैड द्वारा गढ़ा गया बोलने का एक तरीका। भविष्यसूचक वादों की वर्तमान पूर्ति उनके अंतिम सर्वनाशकारी समापन के अग्रदूत के रूप में है। जॉन 4 में सामरी महिला के साथ यीशु की बातचीत ने आत्मा और सच्चाई में प्रामाणिक मसीहाई पूजा के बारे में उनकी शिक्षा को जन्म दिया।

एक पूजा जो जेरूसलम और सामरी लोगों के गेरिज़िम के बीच ऐतिहासिक प्रतिद्वंद्विता को पार करती है, जॉन अध्याय 4 छंद 21 से 25। महिला ने यीशु की भविष्यसूचक पहचान को गहराई से समझा और गेरिज़िम पर्वत पर सामरी पूजा और यरूशलेम में यहूदी पूजा के बीच ऐतिहासिक विभाजन की ओर इशारा किया, जॉन अध्याय 4 श्लोक 20। यीशु ने स्पष्ट रूप से यरूशलेम की केंद्रीयता और उस बिंदु तक मुक्ति के इतिहास की पुष्टि की, लेकिन ध्यान दिया कि भगवान के वर्तमान आंदोलन ने पूजा के स्थान पर पूजा के तरीके को प्राथमिकता दी, जॉन 4:21। यीशु यहूदियों और यरूशलेम की अस्वीकृति के बारे में नहीं बोल रहे थे, बल्कि उत्पत्ति अध्याय 12 में इब्राहीम से किए गए ईश्वर के वादे को ध्यान में रखते हुए, यहूदी चर्च और यहूदी पूजा के मसीहाई नवीनीकरण के रूप में बात कर रहे थे।

पुराने नियम के अनुसार, यरूशलेम मंदिर को सभी राष्ट्रों, यहूदियों, सामरियों और पूरी मानवता के लिए प्रार्थना का घर होना था, जॉन अध्याय 2 पद 17, भजन 69:9 का हवाला देते हुए। जैसा कि

जॉन अध्याय 4 छंद 39 से 42 में कथा सामने आती है, सामरियों का यीशु पर विश्वास आना दर्शाता है कि पूरी मानवता तक पहुंचने की भगवान की योजना पहले से ही पूरी हो रही थी, जॉन अध्याय 1 श्लोक 9, 3:16। जॉन के कई अन्य ग्रंथ लोगों के यीशु के पास आने की बात करते हैं। 1 यूहन्ना अध्याय 2 श्लोक 2 में आगे सोचते हुए, कि यीशु केवल हमारे, यहूदियों के पापों का प्रायश्चित नहीं है, बल्कि पूरे संसार के पापों का प्रायश्चित है। प्रकाशितवाक्य अध्याय 5 छंद 9 और 10, जहां सभी प्रकार की जातीय विविधता के लोग भगवान के सिंहासन के चारों ओर हैं, मेरे की प्रशंसा कर रहे हैं, और प्रकाशितवाक्य की पुस्तक में अन्य पाठ भी हैं।

तो फिर जॉन अध्याय 4 में, प्रामाणिक आध्यात्मिक पूजा का समय यीशु मसीहा के माध्यम से पहले से ही महसूस किया जा रहा था, जॉन अध्याय 4 छंद 23 से 25। यीशु की यरूशलेम की दूसरी यात्रा पर, सब्ब के दिन एक लकवाग्रस्त व्यक्ति के उपचार के कारण संघर्ष हुआ अधिकारियों के साथ, जैसे कि मंदिर को साफ़ करने के कारण उनकी पिछली यात्रा में संघर्ष हुआ था। यीशु ने अपने सब्बाथ कार्य को पिता की निरंतर गतिविधि के साथ जोड़कर अपने कार्यों का बचाव किया, यह पुष्टि करते हुए कि उसके स्वयं के कार्य बिल्कुल पिता के कार्यों को प्रतिबिंबित करते हैं और पिता ने उसे मृतकों को पुनर्जीवित करने और उनका न्याय करने का कार्य सौंपा था, जॉन 5:16 23 के माध्यम से।

ऐसी भाषा आम तौर पर भविष्य के पुनरुत्थान और अंतिम दिन के फैसले को संदर्भित करती है, लेकिन यीशु बताते हैं कि यह पहले से ही घटित हो रहा है। वह जिसे चाहे उसे जीवन दे ही रहा है। जो लोग उसे प्राप्त करते हैं वे पहले ही मृत्यु से जीवन में आ चुके हैं, पुनरुत्थान का अनुभव कर रहे हैं, उद्धारण-अनुद्धारण, जो उन्हें अंतिम दिन की निंदा से हटा देता है।

इस अर्थ में, युगांतिक न्याय का समय पहले से ही मौजूद है कि मृत लोग, ईश्वर से अलग जीवन जी रहे हैं, यीशु के जीवन देने वाले संदेश को सुन रहे हैं और शाश्वत जीवन प्राप्त कर रहे हैं, जॉन 5.25 से 27। नैतिक आध्यात्मिक आंतरिक नवीनीकरण का यह वर्तमान समय होना चाहिए यीशु के श्रोताओं के लिए आश्चर्य की बात नहीं है, क्योंकि यह शारीरिक पुनरुत्थान के भविष्य के घंटे का संकेत देता है जब कब्रों में सभी को जीवन या निंदा के लिए उठाया जाएगा, जॉन 5:28 और 29, जो प्रकाशितवाक्य अध्याय 20, श्लोक 11 से 15 तक की आशा करता है। लाजर की मृत्यु के बारे में मार्था के साथ बाद की बातचीत, जॉन 11, श्लोक 17 से 27, आने वाले अभी तक मौजूद समय के बारे में इस शिक्षण के प्रकाश में सबसे अच्छी तरह से समझी जाती है।

लाजर की मृत्यु के बाद यीशु जानबूझकर बेथनी पहुंचे और लाजर की बहन मार्था से वादा किया कि उसका भाई फिर से जीवित हो जाएगा। जॉन 6:39 और 40 की तुलना में मार्था वास्तव में अंतिम दिन अपने भाई के अंतिम पुनरुत्थान में अपने विश्वास की पुष्टि करती है। यीशु जॉन 11:25 में मार्था के विश्वास को स्वीकार करते हैं, लेकिन वह अधिक गहन सत्य पर जोर देते हैं।

पुनरुत्थान जीवन के दाता के रूप में उनकी मसीहाई पहचान का अर्थ है कि जो लोग उन पर विश्वास करते हैं उनके पास पहले से ही जीवन है और वे कभी नहीं मरेंगे। ईश्वर के साथ उनका महत्वपूर्ण गतिशील संबंध कब्र से परे है। लाजर का अपनी कब्र से बाहर आना दर्शाता है कि यीशु ने जॉन 5:21 से 29 में पहले ही क्या सिखाया था।

यह आने वाले दिन की सुबह, यीशु की खाली कब्र की भी आशा करता है। प्रभावशाली अभिव्यक्ति, समय आ रहा है, फिर भी अभी है, जॉन 4 और जॉन 5 दोनों में पाया जाता है, यह भगवान के भविष्य के मुक्ति कार्य की वास्तविकता को कम नहीं करता है, जितना कि यह मसीह के आने पर अनुभव किए जाने वाले जीवन की वर्तमान उपलब्धता को अधिकतम करता है। . वास्तविक, यद्यपि आंशिक, मोक्ष की पूर्ति भविष्य के युगांतिक समापन की कल्पित वास्तविकता पर आधारित है।

दूसरा मुख्य युगांतशास्त्रीय विषय जिस पर हमें विचार करने की आवश्यकता है वह वह तरीका है जिसमें जॉन परमेश्वर के राज्य के बारे में बात करता है। हालाँकि चौथे सुसमाचार में ईश्वर के राज्य का बार-बार उल्लेख नहीं किया गया है, फिर भी यह जॉन की शिक्षा में भविष्य को समझने की कुंजी है। 1:14, 1:51, 3:13 और कई अन्य ग्रंथों के अनुसार, यीशु ऊपर से, स्वर्ग से, पृथ्वी पर ईश्वर के अधिकार के एजेंट के रूप में आए हैं।

निकोडेमस को यीशु के शब्द यूहन्ना 3:3-8 में ईश्वर के राज्य में भाग लेने की आवश्यकता के रूप में आध्यात्मिक पुनर्जन्म की बात करते हैं। अपनी सीख के बावजूद, निकोडेमस इस कथन से भ्रमित है। उनकी पृष्ठभूमि को देखते हुए, उन्होंने संभवतः राज्य के बारे में भविष्यवक्ताओं के इज़राइल पर भगवान के भविष्य के आशीर्वाद के वादों के संदर्भ में सोचा था, उन्हें उनसे वादा की गई भूमि में अपने पक्ष में बहाल करने, उनके दुश्मनों का न्याय करने और उन्हें चिरस्थायी शालोम लाने के बारे में सोचा था।

यीशु के शब्द राज्य के बारे में निकोडेमुस की धारणाओं को चुनौती देते प्रतीत नहीं होते हैं, जितना कि उसमें प्रवेश करने के बारे में उसकी राष्ट्रवादी धारणाओं को चुनौती देते हैं। चूंकि यीशु का राज्य इस दुनिया से नहीं है, जॉन 18:33-38 के अनुसार, इसे अनुभव करने के लिए परिवर्तनकारी अलौकिक जन्म और परिणामी अंतर्दृष्टि की आवश्यकता होती है। यूहन्ना 1:12, यूहन्ना 3:3-10, यूहन्ना 6:14-15 और अन्य ग्रंथों की तुलना करें।

यह सब इस दृष्टिकोण के अनुरूप है कि जॉन में ईश्वर का राज्य यीशु के वर्तमान मंत्रालय से परे है और भविष्य में इसकी पूर्णता होगी। चर्चा के लिए तीसरा प्रमुख गूढ़ विषय यह है कि जॉन में यीशु के आगमन को किस प्रकार चित्रित किया गया है। जॉन की कथा इस बात पर प्रकाश डालती है कि यीशु पहले ही ईश्वर के मसीहा राजा के रूप में आ चुके हैं।

आने वाले भविष्य के बारे में यीशु के वादे, अध्याय 21, श्लोक 22 और 23, 1 जॉन 2, श्लोक 28-33 की तुलना करें, मुख्य रूप से जॉन 13.31-16.33 में पाए गए प्रवचन में जोर दिया गया है, शुरुआत में पैर धोने और ब्रेकेट में रखा गया है अंत में अध्याय 17 में प्रार्थना द्वारा। ये वादा किए गए आगमन अस्पष्टताएँ प्रस्तुत करते हैं जिससे बहुत अधिक विद्वानों की चर्चा होती है। यहां केवल संक्षिप्त सारांश ही संभव है।

अध्याय 14, श्लोक 1-6 में अपने शिष्यों के लिए जगह तैयार करने के बाद उनके पास फिर से आने का यीशु का वादा, शायद 21, श्लोक 22 और 23 की तुलना में, संभवतः उनके भविष्य के युगांत के संदर्भ में सबसे अच्छा समझा जाता है। मसीहा राजा, जिससे शिष्यों को उसके साथ

रहने के लिए ले जाया गया। निःसंदेह, यह संभव है कि इस भविष्यवादी भाषा को वर्तमान में मौजूद आत्मा और शिष्यों के कार्य को संदर्भित करने के लिए भी समझा जाना चाहिए, जो उन्हें पिता की उपस्थिति में ले जाता है। ऐसा प्रतीत होता है कि इस वादे का उल्लेख 14:28 और 29 और 16:28 में किया गया है।

14:18-21 में शिष्यों के सामने स्वयं को प्रकट करने का यीशु का वादा ताकि वे उसे देख सकें और अनाथ न हों, संभवतः पुनरुत्थान के बाद की उपस्थिति को संदर्भित करता है जिसे बाद में अध्याय 20 और 21 में सुसमाचार में वर्णित किया गया है। यह वादा प्रतीत होता है 16:16-24 में उल्लेख किया गया है। पिता के साथ आने और उन लोगों के साथ रहने का यीशु का वादा जो उससे प्यार करते हैं और उसके वचन का पालन करते हैं, संभवतः उन अंशों के साथ लिया जाना चाहिए जो सहायक आत्मा के आने का वादा करते हैं, अध्याय 14, श्लोक 15-17, 25 और 26, 15:26 और 27, और 16:7-15.

जैसा कि पिता ने यीशु को अपने मंत्रालय के लिए तैयार करने के लिए आत्मा को भेजा था, यीशु ने पुनरुत्थान के बाद अपने शिष्यों को अपने मंत्रालय को जारी रखने के लिए तैयार करने के लिए आत्मा प्रदान की, अध्याय 20, छंद 22 और 23। आत्मा का क्रिस्टोसेंटिक मंत्रालय पूर्वव्यापी और संभावित दोनों है। वह शिष्यों को यह याद दिलाता है कि यीशु ने क्या सिखाया है, और वह उन्हें आने वाली चीजों के बारे में सिखाता है और अपने मंत्रालयों के माध्यम से दुनिया को दोषी ठहराता है।

इस प्रकार, हेल्पर का मंत्रालय चौथे सुसमाचार की कथा के दायरे से परे यीशु के पुनरुत्थान के बाद की उपस्थिति को जारी रखता है। पुनरुत्थान के बाद यीशु का आगमन और उसका आत्मा के माध्यम से पिता के साथ शिष्यों के पास आना, दोनों ही शिष्यों को उनके अंतिम आगमन से पहले आने वाली सभी परेशानियों के बावजूद यीशु के मंत्रालय को जारी रखने में सक्षम बनाते हैं। तदनुसार, ऊपरी कक्ष का प्रवचन इतना अधिक विदाई संबोधन नहीं है जितना कि यह एक उपदेश है कि यीशु के शिष्य उनके मंत्रालय को जारी रखते हैं क्योंकि वे उनके द्वारा भेजे जाने वाले सहायक आत्मा के माध्यम से उनकी निरंतर रूपांतरित उपस्थिति का अनुभव करते हैं।

जॉन में एक अंतिम युगांतशास्त्रीय विषय जिस पर हम चर्चा करना चाहते हैं वह है सृष्टि का नवीनीकरण। आने वाले समय के लिए जॉन के धर्मशास्त्र का कुछ हद तक उपेक्षित उदाहरण, जो पहले से ही यहाँ है, जॉन 1:1-18 की प्रस्तावना में पाया जाता है। यह राजसी पाठ शब्द, लोगो को न केवल पहले से मौजूद एक सरकोस, अशरीरी निर्माता के रूप में प्रस्तुत करता है, बल्कि अवतार के रूप में भी प्रस्तुत करता है। सरकोस, और मांस निर्माता, भगवान के प्रकटकर्ता।

यूहन्ना 1:1-3 शब्द को हर चीज़ के मूल निर्माता के रूप में प्रस्तुत करता है। जॉन 1, छंद 4 और 5 इस शब्द को एक ऐसे तरीके से प्रकटकर्ता के रूप में प्रस्तुत करता है जो एक अव्यक्त जोहानिन नई रचना धर्मशास्त्र को मान्य करता है। यह अध्याय 1, छंद 12 और 13 में लोगो में विश्वास के माध्यम से उपलब्ध जीवन को चित्रित करने के लिए प्रकाश और अंधेरे भाषा के व्यापक उपयोग में देखा जाता है, साथ ही यह भी कि जो लोग विश्वास नहीं करते हैं उनके लिए मृत्यु बनी रहती है, जॉन 3, छंद 16-21, वे अंधकार में रहते हैं।

जीवन और प्रकाश के रूप में लोगो के रूप में जॉन का चित्रण, यीशु को सृष्टि के नवीनीकरणकर्ता के रूप में रेखांकित करता है। प्रकटकर्ता के रूप में शब्द पर जॉन की शिक्षा, जॉन 1, छंद 14-18 में अधिक स्पष्ट रूप से जोर देती है, निर्गमन 33 और 34 में भगवान के बारे में मूसा के अनुभवों पर आधारित है, विशेष रूप से अध्याय 34, छंद 6। जिसे आमतौर पर पॉल द्वारा स्पष्ट रूप से संप्रेषित किया जाना समझा जाता है पत्र-संबंधी तर्क में, रोमियों 5:12-21, और अन्य ग्रंथों में, एक एडम-क्राइस्ट युगांतशास्त्रीय सादृश्य, जहां मोक्ष को नई रचना के रूप में चित्रित किया गया है, चौथे सुसमाचार के लेखक द्वारा भी संप्रेषित किया गया है, भले ही कथात्मक कलात्मकता के माध्यम से परोक्ष रूप से। टिप्पणियाँ जॉन 1 के विभिन्न विवरणों की रचना के स्वरूप के बारे में अलग-अलग टिप्पणियाँ करती हैं, लेकिन विषय का विस्तारित उपचार अपेक्षाकृत असामान्य है।

कुछ टिप्पणियाँ और अन्य अध्ययन जॉन 1:19 और निम्नलिखित में सात दिन पाते हैं, जिन्हें उत्पत्ति 1 की प्रतिध्वनि के रूप में देखा जाता है। अन्य अध्ययनों में जॉन 20, श्लोक 15 में एक बगीचे के संदर्भ में स्वर्ग के रूपांकन का प्रमाण मिलता है। प्रकाशितवाक्य 2, श्लोक 7, प्रकाशितवाक्य 22, 1 और 2, और श्लोक 14 और 19 की तुलना करें। यूहन्ना 20, श्लोक 22, उत्पत्ति 2, श्लोक 7 का संकेत हो सकता है। कुल मिलाकर, जीवन की वास्तविकता का जुड़ाव यूहन्ना 8, पद 12 में प्रकाश के रूपक वाला शब्द, एक नए सृजन पाठ के रूप में यूहन्ना 1, पद 4 और 5 की समझ के लिए विशेष रूप से महत्वपूर्ण है।

1 जॉन प्रकाश और जीवन को भी जोड़ता है। जो लोग अंधेरे में रहते हुए प्रकाश में होने का दावा करते हैं, वे प्रदर्शित करते हैं कि वे नई सृष्टि का हिस्सा नहीं हैं, 1 जॉन 1, श्लोक 4 से 7। शैतान के अंधेरे पर भगवान के प्रकाश का वर्तमान अतिक्रमण नैतिक द्वैतवाद और प्रगतिशील की एक रूपक प्रस्तुति है सृष्टि का नवीनीकरण, 1 यूहन्ना 2, श्लोक 8 से 11 में। 1 यूहन्ना 2:13 और 14 उत्पत्ति 1:1 और यूहन्ना 1:1 को उद्घाटित करते हुए विश्वासियों को ऐसे लोगों के रूप में संदर्भित करते हैं जो उसे जानते हैं जो आरंभ से है, जिसकी वाणी प्रकाश को सामने लाती है अस्तित्व में।

इसके अलावा, जॉन के सर्वनाश का श्रेय यीशु की रचना के नवीनीकरण के जोहानाइन धर्मशास्त्र को दिया जाता है। यह संभव है कि प्रकाशितवाक्य 3, श्लोक 14 में ईश्वर की रचना की शुरुआत के रूप में यीशु के वर्णन में यीशु को सृष्टि के नवीनीकरण के सर्वोच्च मुखिया के रूप में संदर्भित किया गया है। शैतान द्वारा यीशु का विरोध किया गया है, जिसे आदम और हव्वा को धोखा देने के संदर्भ में पुराने साँप के रूप में वर्णित किया गया है, प्रकाशितवाक्य 12 और 20।

प्रकाशितवाक्य 4, श्लोक 11 में सिंहासनारूढ़ रचनाकार को दी गई प्रशंसा को प्रकाशितवाक्य 5, श्लोक 9 और 10 में मारे गए मेमने को दी गई प्रशंसा के साथ जोड़ा गया है। सिंहासन कक्ष के दृश्य के अंत में, सिंहासनारूढ़ व्यक्ति और मेमने को समान प्राप्त होता है स्तुति, सृष्टि पर शाश्वत प्रभुत्व की परिणति। प्रकाशितवाक्य 10, 6 में, एक स्वर्गदूत उस परमेश्वर की शपथ लेता है जिसने स्वर्ग, पृथ्वी और समुद्र में सब कुछ बनाया है कि न्याय में अब और देरी नहीं की जाएगी।

प्रोटोलॉजिकल निर्माता के रूप में भगवान की भूमिका उन्हें सृष्टि के गूढ़ शोधक होने का अधिकार देती है। इसी तरह, प्रकाशितवाक्य 14:7 में, जो लोग पृथ्वी पर रहते हैं उनसे उस परमेश्वर की आराधना करने का आग्रह किया जाता है जिसने स्वर्ग और पृथ्वी को बनाया क्योंकि बेबीलोन परमेश्वर के क्रोध के अधीन आने वाला है। प्रकाशितवाक्य 19, 13 में परमेश्वर का निर्णय का प्रतिनिधि उसका लोगो है।

अंततः, दुष्ट शहर बेबीलोन का पतन पवित्र शहर यरूशलेम के अवतरण का मार्ग तैयार करता है क्योंकि स्वर्ग और पृथ्वी में सभी चीजें नई बन जाती हैं, प्रकाशितवाक्य 3:12, प्रकाशितवाक्य 21:1, और निम्नलिखित की तुलना 2 पतरस 3:13 से करें . ऐसी भाषा यशायाह 65:17-66 की याद दिलाती है। नए यरूशलेम की कई विशेषताएं उत्पत्ति 1-3 के चौकस पाठक को याद दिलाती हैं, उनमें मृत्यु का अंत और उससे संबंधित सभी दर्द, जीवन के वृक्ष में पानी की उपलब्धता और अंतहीन दिव्य प्रकाश की उपस्थिति शामिल है।

भगवान की उपस्थिति उनके लोगों के लिए पूरी तरह से मध्यस्थ है क्योंकि सर्वशक्तिमान भगवान और मेम्ना इसके मंदिर हैं। अंत में, हम जॉन की युगांतकारी जीवन की प्रस्तुति के संबंध में कुछ निष्कर्ष निकालते हैं ।

निष्कर्षतः, जीवन के बाइबिल आधारित धर्मशास्त्र को स्पष्ट और मूर्त रूप देना ।

इसमें कोई संदेह नहीं है कि जॉन इस बात पर जोर देते हैं जिसे आरंभिक युगांतशास्त्र के रूप में जाना जाता है, भविष्य की उपस्थिति, भविष्य से भी अधिक। यह विशेष रूप से यीशु की शिक्षा में देखा जाता है कि आने वाले समय की उपस्थिति का मतलब है कि प्रामाणिक पूजा अब भूगोल का विषय नहीं है और विश्वासियों को पहले से ही भगवान के साथ एकता में अंतहीन जीवन का अनुभव होता है। उसी तर्ज पर, यीशु ईश्वर के आने वाले राज्य में भागीदारी के लिए वर्तमान आध्यात्मिक परिवर्तन की आवश्यकता सिखाते हैं।

युगान्तकारी भागीदारी को साकार करने के लिए उसे पिता के पास जाना होगा और दोबारा आना होगा। लेकिन इस बीच, वह अपने पुनरुत्थान के बाद अपने शिष्यों के सामने प्रकट होंगे और उनके सहायक के रूप में आत्मा को अपने प्रतिनिधि के रूप में भेजेंगे। इस सब में उनका सर्वोपरि लक्ष्य दुनिया के नवीनीकरण, एक नए स्वर्ग और एक नई पृथ्वी से कम नहीं है जिसमें भगवान अपने लोगों के साथ एक नए यरूशलेम में निवास करते हैं।

जॉन और भविष्य पर सिनॉट्रिक गॉस्पेल के बीच मतभेदों को अधिक महत्व नहीं दिया जाना चाहिए। दोनों स्पष्ट रूप से सिखाते हैं, जैसा कि एश्टन ने कहा, कि आने वाले जीवन में लोगों का स्थान पूरी तरह से वर्तमान जीवन में किए गए नैतिक निर्णयों से निर्धारित होता है। एश्टन के विचार में, विश्वास और अविश्वास के तत्काल परिणामों पर जॉन का जोर अंतिम निर्णय को नष्ट कर देता है ।

लेकिन जॉन के विचार के अनुसार, यह कहना अधिक सत्य है कि जॉन भविष्य को इतना अधिक नष्ट नहीं कर रहा है जितना कि वह वर्तमान को नष्ट कर रहा है , यीशु में विश्वास की तात्कालिकता और उसके माध्यम से ईश्वर के साथ सच्ची संगति की वास्तविकता को रेखांकित कर रहा है। यह

युगांतकारी जीवन कैसा दिखता है? मौलिक रूप से, यह प्रचुर जीवन है, जॉन 10.10, जो परमेश्वर के वचन, जॉन 6.63-68 के माध्यम से पवित्र आत्मा द्वारा उत्पन्न हुआ है। यीशु स्वयं परमेश्वर की ओर से जीवन है, पुनः जन्म लेकर। यूहन्ना 14:6, 1 यूहन्ना 1:1, 5:11 और 20।

परमेश्वर के जीवन के रूप में, यीशु जगत को जीवन देता है, यूहन्ना 17:2, यूहन्ना 20:31। यीशु का जीवन देने वाला वचन पाप से अंधेरी दुनिया में वंचित लोगों के पास आता है, उन्हें उसी तरह रोशन करता है जैसे भगवान ने उस दुनिया को रोशन किया था जिसे उसने मूल रूप से बनाया था, जॉन 1:1-5, जॉन 3:16-21 और अन्य ग्रंथ। यह जीवन वास्तव में उसी प्रकार का है जिसे जॉन 6:57 और 17:3 में पहले से ही यीशु, उसके पिता और दिलासा देने वाले द्वारा साझा किया गया है। यह आत्मा और सत्य में प्रामाणिक आराधना का जीवन है, चाहे वह किसी भी स्थान पर हो, यूहन्ना 4:23-24। यह प्रेम का जीवन है, यीशु, साथी मसीह अनुयायियों और अन्य मनुष्यों के लिए प्रेम। यह प्रेम वास्तव में उसी प्रकार का प्रेम है जो 1 यूहन्ना 3:14-16 की तुलना में, यूहन्ना 13:34-35 में नए आदेश पाठ के अनुसार, पहले से ही यीशु, उसके पिता और दिलासा देने वाले द्वारा साझा और दिखाया गया है। यह यीशु के प्रति आज्ञाकारिता का जीवन भी है।

जॉन 15:10 के अनुसार, यह आज्ञाकारिता वास्तव में पिता के प्रति यीशु की आज्ञाकारिता के समान ही है। यह साथी विश्वासियों के साथ एकता का जीवन है, उस प्रकार की एकता जो वास्तव में पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा द्वारा साझा की गई है, अर्थात् एक मिशनरी एकता जो दुनिया को यीशु में विश्वास लाने के लिए बनाई गई है, यूहन्ना 17:21-23 के अनुसार. अंततः, यह एक जीवित जीवन है, जो अंतिम दिन के पुनरुत्थान के बाद, मृत्यु के बाद परिवर्तित जीवन की आशा करता है, यूहन्ना 5:28, 6:40, 6:54। प्रकाशितवाक्य 2:10-24 से तुलना करें। यह वास्तव में उसी प्रकार का जीवन है जिसका अनुभव यीशु ने पहली ईस्टर सुबह किया था। प्रकाशितवाक्य 2:8 से तुलना करें। जब पॉल ने 1 कुरिन्थियों 11:24-26 में यीशु की यूचरिस्टिक शिक्षा को आगे बढ़ाया, तो उसने सिखाया कि विश्वासी भविष्य के बारे में विचार करने के लिए मेज पर नहीं आते हैं, बल्कि भविष्य को ध्यान में रखते हुए अतीत, प्रभु की मृत्यु को याद करते हैं और उसकी घोषणा करते हैं। जब तक वह नहीं आता. अतीत में मसीह के कार्य का निर्णायक मूलभूत महत्व अनिवार्य रूप से आने वाले दिन को और अधिक आवश्यक नहीं बनाता है, फिर भी एक अर्थ में प्रतिकूल बनाता है।

भविष्य की महिमा केवल उस अनंत मूल्य के प्रकटीकरण में निहित है जो यीशु ने पहले ही पिता द्वारा उसे दिए गए कार्य में पूरा कर लिया है। आइचटेन के शब्द हमारी ओर से कुछ विचार और चिंतन के योग्य हैं। आइचटेन का कहना है कि ईसाई विश्वास की प्रकृति किसी भी प्रकार की भविष्यवादी युगांतशास्त्रीय अपेक्षा से जुड़े महत्व में कुछ कमी लाती है।

ईश्वर के साथ मनुष्य के संबंध में अब तक की सबसे महत्वपूर्ण क्रांति ईसा द्वारा प्राप्त की गई है। इस प्रकार के कुछ दृढ़ विश्वास के बिना, सुसमाचार अपेक्षाकृत छोटी बीयर होगी।

इसलिए, हम जॉन के सुसमाचार और समग्र रूप से जॉन के लेखन में कुछ प्रमुख विचारों को याद दिलाकर अपनी बात समाप्त करते हैं।

हमें यूहन्ना 16, श्लोक 33 में बताया गया है कि यीशु ने दुनिया पर विजय प्राप्त कर ली है, जैसा कि यूहन्ना, प्रकाशितवाक्य 5:5 में प्रतिध्वनित होता है। यहूदा के गोत्र का सिंह, दाऊद का मूल, जीत गया है। वध किया गया मेम्ना शक्ति, धन, बुद्धि, पराक्रम, सम्मान, महिमा और आशीर्वाद पाने के योग्य है, प्रकाशितवाक्य 5:12। यूहन्ना 17 से तुलना करें।

आओ, प्रभु यीशु, परमेश्वर के राज्य में आओ। प्रकाशितवाक्य अध्याय 22, श्लोक 20। समय आ रहा है और अब है।

यह जॉन के सुसमाचार पर अपने शिक्षण में डॉ. डेविड टर्नर हैं। यह सत्र 22 है, लाइफ एस्चैटोलॉजिकलाइज़्ड, जॉन में भविष्य।